कथा क्रम

जनवरी–मार्च, 2026
मूल्य – ₹ 60

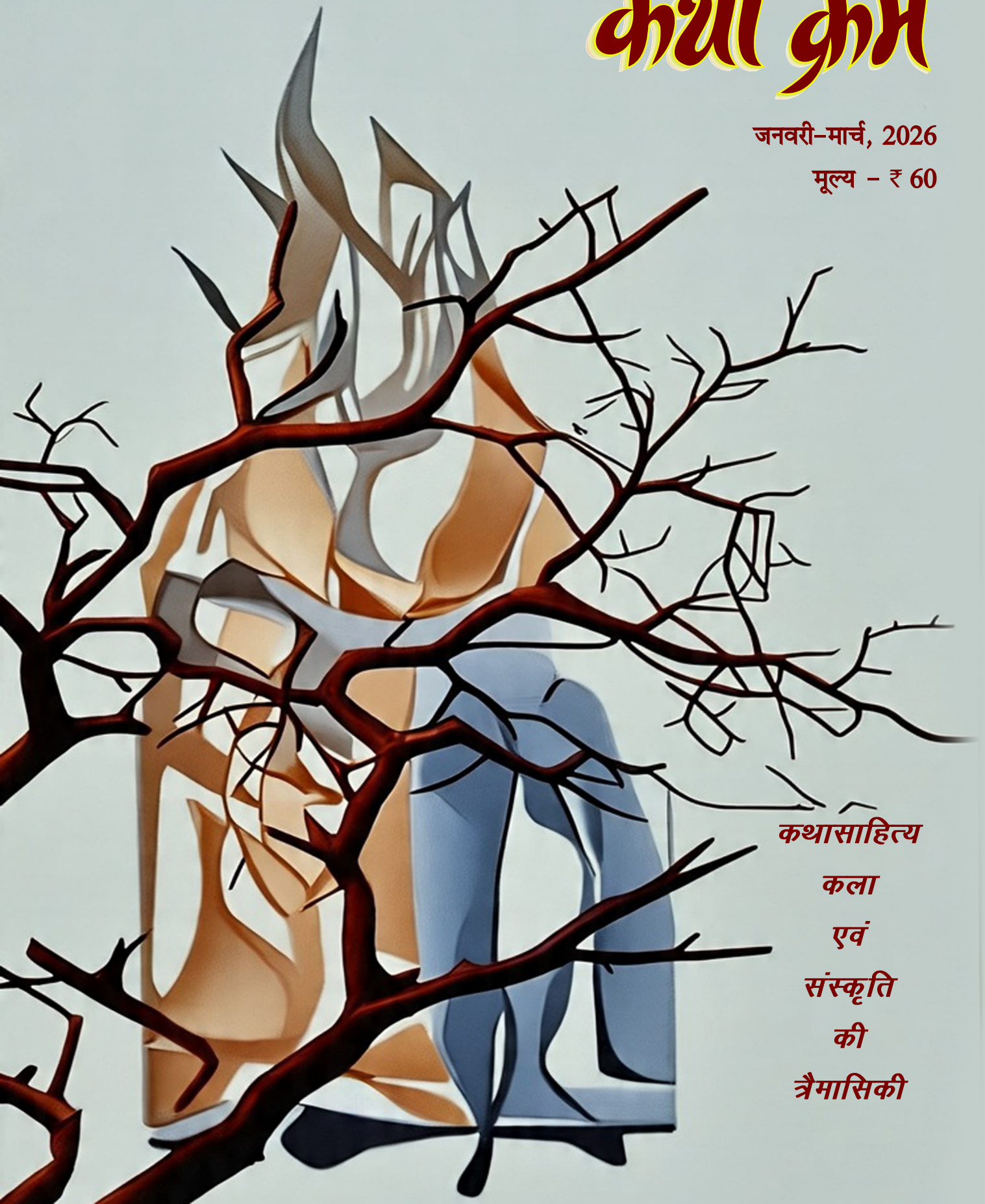

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

कथाक्रम – 2025

कथा क्रम – 2025
हिन्दी कथा साहित्य पर केन्द्रित अखिल भारतीय आयोजन
लखनऊ – 07 दिसम्बर 2025
आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान – 2025
सम्मानित कथाकार: भालचंद्र जोशी
संगोष्ठी– हिन्दी साहित्य और जनपदीय भाषाएं

कथा क्रम – 2025
कथा साहित्य पर केन्द्रित अखिल भारतीय आयोजन
लखनऊ – 07 दिसम्बर 2025
न्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान – 2025
सम्मानित कथाकार: भालचंद्र जोशी
संगोष्ठी– हिन्दी साहित्य और जनपदीय भाषाएं

कथा क्रम – 2025
हिन्दी कथा साहित्य पर केन्द्रित अखिल भारतीय आयोजन
लखनऊ – 07 दिसम्बर 2025
आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान – 2025
सम्मानित कथाकार: भालचंद्र जोशी
संगोष्ठी– हिन्दी साहित्य और जनपदीय भाषाएं

2025
वल भारतीय आयोजन
र 2025
म सम्मान – 2025
लचंद्र जोशी
जनपदीय भाषाएं

ISSN-2231-2161

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

वर्ष : 28 अंक : 107

जनवरी-मार्च 2026

कहानियां

11 **जयनंदन** : वर्चस्व
15 **मनीष वैद्य** : बूट साहब का बाजा
20 **कान्ता रॉय** : उदास आंखों के जलते बुझते जुगनू
41 **गोविन्द उपाध्याय** : कायांतरण
46 **डॉ. उपमा शर्मा** : गंध
53 **डॉ. अंजू त्रिपाठी** : अदृश्य नज़रें
58 **दशरथ परमार** : अन्तर्वाही

लघुकथाएं

08 **चित्रा मुद्गल** : भूखे नंगे, नसीहत, रक्षक-भक्षक
19 **रेखा शाह आरबी** : सोशल मीडिया का सच
40 **महावीर रवांल्टा** : मोबाइल
65 **मॉर्टिन जॉन** : रामदुलारियों के सपने

स्मृति-शेष

05 **डॉ. हरेराम सिंह** : वीरेंद्र यादव : सत्ता को चुनौती देने वाले हिंदी के बड़े आलोचक

लेख

27 **डॉ. कुमारी उर्वशी** : बौद्धिक हस्तक्षेप और साहित्य की ज़िम्मेदारी : डॉ. रविभूषण का आलोचनात्मक विवेक
34 **डॉ. रजनी दिसोदिया** : सनातन : उपन्यास और इतिहास एक साथ

कविताएं

66 **उपेन्द्र कुमार** : जिस वक्त हो सकता था वक्त
66 **निर्मल गुप्ता** : घर से दूर
67 **रमेश कुमार सोनी** : विज्ञापन, पुनर्जन्म
68 **पूजा जिनागल** : मेमने की गंध, पगड़ंडियां
69 **शिल्पी जैन** : मुक्ति, दु:ख (1), दु:ख (2)
70 **श्रेयांश आदित्य** : बनफूल, किकी

यात्रा-वृत्तान्त

71 **गोविन्द मिश्र** : किशोरी, कावेरी और कुर्ग

कथा-शोध

76 **डॉ. चन्दन कुमार** : नगरवधुएं, समाज और व्यवस्था : हाशिए पर खड़ी जिंदगियों का यथार्थ

वक्तव्य : कथाक्रम-2025

82 **जगदीश्वर चतुर्वेदी** : हिंदी साहित्य और जनपदीय भाषाएं
85 **ईश्वर सिंह दोस्त** : गैर-जनपदीय हिंदी और जनपदीय भाषाएं : कुछ प्रश्न
90 **लोकबाबू** : हिन्दी साहित्य और जनपदीय भाषाएं

समीक्षाएं

92 **आनन्द बहादुर** : यन्न भारते तन्न भारते (उपन्यास : संतोष दीक्षित)
95 **महेश दर्पण** : लघुकथा को बलराम का अवदान : मसीहा की आंखें (लघुकथा संकलन : बलराम)
99 **सुधा उपाध्याय** : जब से आंख खुली है (आत्मकथा : लीलाधर मंडलोई)
102 **राजबोहरे** : आलोचनात्मक संयम और दक्षता की पुस्तक (कथा आलोचना : पवन माथुर)

रपट : कथाक्रम-2025

107 **सुजाता राज्ञी** : 'कथाक्रम : 2025 :' हिन्दी साहित्य और जनपदीय भाषाएं
109 **भालचन्द्र जोशी** : आज का समय कहानी समय हैं-
02 **संपादकीय** : साहित्य, साहित्यकार और समाज

आवरण : **बंसीलाल परमार**
रेखाचित्र : **अजय कुमार सिन्हा**

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 60 ₹
सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-900 ₹, आजीवन 4000 ₹
संस्थाएं : वार्षिक-400 ₹, त्रैवार्षिक-1100 ₹, आजीवन 5000 ₹
(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी. -देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

साहित्य, साहित्यकार और समाज

पिछले कुछेक सालों से साहित्य को लगातार न केवल निचले दर्जे पर ढकेला जा रहा है बल्कि उसके प्रति सरकार का उपेक्षा भाव इतना अपमानजनक और स्पष्ट है कि उसमें समझने को कुछ बाकी नहीं है। साहित्य को लेकर किसी प्रकार का सम्मानभाव तो पूरी तरह लापता है ही, तिरस्कार और तुच्छता का आचरण प्रदर्शित करने के साथ इसे छिपाने अथवा 'तू मुझसे खफा है तो जमाने के लिए आ' जैसा कुछ भाव जाहिर करने की आवश्यकता भी सत्तापक्ष, उसकी संस्थाएं व कारिन्दे महसूस नहीं करते। आजादी की आधी सदी के कुछ बाद तक हर सरकार में किसी न किसी रूप में साहित्य और साहित्यकारों की कुछ मान्यता थी। संसद में उनका प्रतिनिधित्व था। प्रधानमंत्री व अन्य राजनेताओं का साहित्यकारों से कुछ न कुछ संवाद था जिसके अनेक दृष्टांत हमारे संज्ञान में हैं। कला और साहित्य की अनेक संस्थाओं को स्थापित ही नहीं किया गया बल्कि उनकी कार्यप्रणाली को सुव्यवस्थित करके किसी हद तक उन्हें स्वायत्ता भी प्रदान की गई थी। इसका यह अभिप्राय कतई नहीं है कि सरकार का इन संस्थाओं में किसी प्रकार का दखल नहीं था। पर जाहिरा तौर यह कोशिश रहती थी कि कला, साहित्य और संस्कृति की संस्थाओं के कामकाज की स्वायत्तता का न केवल सम्मान किया जाए बल्कि उनके संबंध में आम धारणा भी ऐसी ही रहे।

स्वाभाविक रूप से देश के अधिकांश नागरिकों में इन इकाईयों की कार्यप्रणाली पर विश्वास था। इसका व्यापक एवं समग्र प्रभाव लोगों में साहित्य, कला के प्रति सम्मानभाव के रूप में दिखलाई देता था। साहित्य और कला से जुड़ी प्रतिभाओं का समाज आदर करता था। डेढ़ सौ वर्ष की गुलामी के दौरान जब साहित्य तमाम प्रतिबंधों और विधिक अड़चनों से जूझता रहा था, 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विदेशी शासकों से देश की मुक्ति का अहसास कराने के लिए यह सांस्कृतिक व साहित्यिक आजादी निहायत जरूरी थी।

किंतु पिछले कुछेक सालों में साहित्य और कला की इन संस्थाओं को या तो निष्क्रिय बना दिया गया है अथवा पंगु। साहित्य अकादमी जैसी सम्मानजनक संस्था इसका ज्वलंत और ताजा उदाहरण है। 18 दिसम्बर 2025 को साहित्य अकादमी के सम्मानों की घोषणा का हम सबको बेताबी से इंतजार था। परम्परा के अनुसार अकादमी के सचिव द्वारा पत्रकारों को आमंत्रित किया गया था पर निर्धारित समय पर सचिव अनुपस्थित थे और पुरस्कारों की घोषणा को स्थगित कर दिया गया। जाहिर है ऐसे मामलों में कोई स्पष्टीकरण देना सरकार कभी जरूरी नहीं समझती। दो माह से अधिक समय बीत चुका है और आज तक अकादमी के सम्मानों का कोई अतापता नहीं है। फिलवक्त संशय बना हुआ हैं कि 2025 के ये वार्षिक पुरस्कार दिए जाएंगे या नहीं अथवा ये भी अन्य संस्थाओं के सम्मानों की तरह सद्गति को प्राप्त होंगे।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के सम्मान जो महामहिम राष्ट्रपति द्वारा अपने हाथों से प्रदान किए जाते थे, पिछले कुछ सालों से ठप्प हैं। यही दुर्गति उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के वार्षिक सम्मानों की हुई है जो पिछले चार, पांच सालों से अघोषित हैं। हिंदी अकादमी दिल्ली के पिछले वर्ष घोषित तीन सालों के पुरस्कारों पर भी सरकार का चाबुक चला है और वे प्रसव पीड़ा में पत्रावलियों में कराह रहे हैं। इसे सियासी चश्मे से देखा जाए या नहीं, समझ नहीं आता। मध्य प्रदेश में भी भाजपा की सरकार पिछले लगभग दो दशकों से है पर वहां सम्मान दिए जा रहे हैं। अन्य हिंदीतर राज्यों की जानकारी मुझे नहीं है।

विचारणीय है कि इन साहित्यिक सम्मानों को रोकने या बंद करने के पीछे आखिर क्या मानसिकता है?

स्वाभाविक है कि विचारधारा का प्रभाव तो असंदिग्ध है ही जिसकी वजह से भिन्न और कुछ हद तक विरोधी विचारधारा के पात्र रचनाकारों को इनसे दूर रखा जाता है। सत्ताधारी नेतृत्व यह भी मानता है कि ऐसी बंदिशों का समाज पर कोई प्रभाव नहीं है क्योंकि देश के अधिकांश नागरिक साहित्य से दूर हैं। साहित्यकार के नाम पर वे जिन रचनाकारों को जानते हैं, साहित्य में उनका कोई स्थान नहीं है। जाहिर है कि साहित्यिक संस्थाओं के पुरस्कार या सम्मान दिए जाने या बंद होने के प्रति वे उदासीन हैं क्योंकि जिन रचनाकारों को सम्मानित किया जाता है, वे उनसे पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। इसलिए सरकार को भी साहित्य और लेखकों की कोई चिंता नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी खिलाड़ी को पुरस्कार या मेडल मिलने पर न केवल प्रधान मंत्री उनसे फोन पर बात करते हैं वरन भेंट भी करते हैं जो स्वागत योग्य है। पिछले तीन सालों में दो भारतीय लेखकों को अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार तथा प्रख्यात रचनाकार विनोद कुमार शुक्ल को अमरीका के प्रतिष्ठित पैन सम्मान से समादृत किया गया किंतु किसी स्तर पर उन्हें शुभकामनाएं तक नहीं दी गई। संस्कृति या मानव संसाधन मंत्रालय ने भी इन पर पूरी तरह चुप्पी ओढ़ी रखी। इसी से उनकी निगाह में साहित्य के स्थान अथवा महत्ता का आभास हो जाता है। मीडिया भी राजनीतिक आकाओं का अनुगमन करता है और साहित्य के ऐसे समाचारों को अंदर के पृष्ठों में तुच्छ स्थान देकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेता है जबकि तस्करों, बलात्कारियों की खबरें कई कई दिन तक अखबारों की सुर्खियां बनी रहती हैं।

समाज और उसके प्रबुद्धजन जिनकी साहित्य में रुचि है, साहित्य के नाम पर हो रहे लिटफेस्ट में जिन 'नामचीन साहित्यकारों' से रूबरू होते हैं, उनकी साहित्य की पिपासा क्षमित करने के लिए पर्याप्त है। उनकी नजर में कुमार विश्वास से बड़ा कवि हिंदी में नहीं है। अशोक वाजपेयी, अरुण कमल, जगूड़ी, अनामिका जैसों के नाम तक से वे अनजान हैं। और ये पाठक/ श्रोता कथित प्रबुद्ध समाज के सदस्य हैं। जाहिर है ऐसे में यदि एक विश्वविद्यालय का कुलपति मनोज रुपड़ा जैसे चर्चित कथाकार का मंच से सरेआम अपमान करता है तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। कुलपति के नाते वह कार्यक्रम के आयोजक थे और इसीलिए उन्होंने पूरे अभिमान से कहा कि उन्हें किसी अतिथि लेखक को समारोह से निष्काषित करने का अधिकार है जिसे साहित्य अकादमी और उनके विश्वविद्यालय द्वारा ससम्मान आमंत्रित किया गया था। उनके इस अशिष्ट और अनादरपूर्ण आचरण का कुछ प्रतिभागियों द्वारा मामूली विरोध किया गया किंतु कुलपति होने के दर्प में चूर असभ्य कुलपति द्वारा उसे पूरी तरह नकार ही नहीं दिया गया बल्कि यह तक घोषणा की कि जो अन्य प्रतिभागी जाने के इच्छुक हैं, वे जा सकते हैं। कार्यक्रम यथावत जारी रहा। अंग्रेजी के अखबार 'इंडियन एक्सप्रेस' के अलावा किसी अखबार ने इस कुत्सित व शर्मनाक घटना पर गंभीरता से नहीं लिखा।

मैं इस घटना को उपरोक्त वर्णित संदर्भ से जोड़कर देखता हूं जहां साहित्य और साहित्यकार घोर उपेक्षा व तिरस्कार में रहने के लिए अभिशप्त हैं, जहां एक केंद्रीय विवि का कुलपति हिंदी के महत्वपूर्ण कथाकार को जानता तक नहीं और उसके नाम तक का उपहास कर रहा है। ऐसी घटनाओं का समाज पर प्रभाव पड़ना ही है। ऐसा समाज जो साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में अद्योगति की ओर अग्रसर है, के सम्बंध में प्रख्यात विचारक गेटे ने कहा था, 'साहित्य में गिरावट राष्ट्र की गिरावट का द्योतक है।'

पिछले कुछ महीनों में हमने हिंदी की कुछ अप्रतिम विभूतियों को खोया है। विनोद कुमार शुक्ल और ज्ञानरंजन हिंदी साहित्य की धरोहर हैं। विनोद कुमार शुक्ल विगत तीन सालों से खासे चर्चा में भी रहे जब उन्हें पहले अमरीका का प्रतिष्ठित पैन अवार्ड और पिछले वर्ष ज्ञानपीठ सम्मान से समादृत किया गया। इसी के साथ हिंदी के एक प्रकाशक द्वारा उन्हें रॉयल्टी के तौर पर भारी भरकम रकम दिया जाना भी खूब चर्चा में रहा। हिंदी में ऐसे रचनाकार बिरले हैं जिन्होंने कविता तथा कहानी/उपन्यास दोनों विधाओं में अपूर्व प्रतिष्ठा अर्जित की।

कहानीकार के तौर पर ज्ञानरंजन अनूठे लेखक के रूप में समादृत हैं। कम लिखकर उन्होंने अपूर्व प्रतिष्ठा अर्जित की हालांकि मुझे लगता है कि ऐसा करके उन्होंने हिंदी कहानी को कुछ उत्कृष्ट रचनाओं से वंचित रखा। शायद इसका कुछ दुष्प्रभाव अन्य लेखकों पर भी हुआ। अलबत्ता उनकी अधिकांश कहानियां जनमानस में रची बसी हैं। इन दो श्रेष्ठ एवं अद्वितीय रचनाकारों का निधन हिंदी साहित्य की अपूर्णीय क्षति है। कथाक्रम की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

लखनऊ की एक साहित्यिक विभूति और कथासाहित्य के अत्यंत सम्मानित आलोचक वीरेन्द्र यादव का आकस्मिक निधन हम सब के लिए एक गहरा आघात है। अचानक सूचना मिलने से पूरा साहित्यिक जगत स्तब्ध रह गया। लखनऊ में आने के बाद मेरा सबसे पहले उन्हीं से परिचय हुआ था। उनके जरिए लखनऊ के कई लेखकों से मेल मुलाकात हुई। बाद में जब 1996 में कथाक्रम आयोजन की योजना बनी तो उसमें उनकी अग्रणी भूमिका थी। कथाक्रम को लखनऊ में स्थापित करने में उनका सहयोग लगातार मिलता रहा तब भी जब वे इसके आयोजन से सीधे नहीं जुड़े रहे। कार्यक्रम में जो भूमिका उनसे निवेदित की जाती, वह कभी इंकार नहीं करते। कथाक्रम का तैंतीसवां आयोजन 7 दिसम्बर

2025 को हुआ था जिसके सम्मान सत्र की अध्यक्षता वीरेन्द्र जी ने की और अपने करकमलों से सम्मानित लेखक भालचंद जोशी को 'आनंद सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान 2025' प्रदान किया।

वीरेन्द्र जी साहित्य के गंभीर पाठक व अध्येता थे। उनके अध्ययन व सोच की एक स्पष्ट दिशा थी। वे सामाजिक सरोकारों से गहराई से जुड़े थे और कृतियों का मूल्यांकन उसी आधार पर करते थे। उसे लेकर किसी प्रकार का समझौता उन्हें अमान्य था। उसमें वह कोई रियायत नहीं करते थे चाहें रचनाकार कोई भी हो। अपनी वैचारिकी के प्रति वे अडिग थे और उसे लेकर वह कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थे। नतीजतन उनका कई वरिष्ठ लेखकों से मनमुटाव हुआ हालांकि बाद में कुछ से सम्बंध सामान्य भी हुए। धीरे धीरे वो सोशल मीडिया पर अत्यंत सक्रिय हो गए जिसमें वह अत्यंत बेबाकी और साहस से मुद्दों को उठाते थे। गरीब, वंचित और हाशिए के समाज के पक्ष में वह लगातार लिखते थे। कुछ हद तक उनका रूपान्तरण एक आलोचक से सक्रिय बौद्धिक के तौर पर हो गया था जिसमें उन्होंने खूब सराहना पाई और विरोध भी सहा। कोई सहमत हो या न हो, पर उनकी इस सक्रियता का सब सम्मान करते थे और उनकी पोस्ट की प्रतीक्षा करते थे। शायद मौजूदा दौर में इस रूप में वह अद्वितीय थे हालांकि मुझ जैसे अनेक मित्रों का कहना था कि सोशल मीडिया पर अतिश्य सक्रियता से उनका आलोचना कर्म प्रभावित हुआ था। अध्ययन तो जारी रहा पर उनका आलोचनात्मक लेखन काफी कम हो गया। वह स्वयं भी इसे स्वीकार करते थे।

जाहिरा तौर पर कुछ रिजर्व तथा अपनी धारणाओं और सोच को लेकर कोई समझौता न करने के कारण कुछ को लगता था कि वह सामाजिकता से दूर हैं या उनके आचरण व व्यवहार में मधुरता एवं स्नेह का अभाव है। पर यह कतई सच नहीं था। आपसी मेलजोल और बातचीत मे वह अत्यंत सौम्य और सम्मानपूर्ण थे।

उनका असमय निधन हिंदी कथा आलोचना के लिए एक गंभीर आघात है, साथ ही लखनऊ के साहित्य जगत की एक बड़ी क्षति है जिसकी भरपाई संभव नहीं दिखती। लखनऊ के अनेक रचनाकार साहित्य और साहित्यिक मुद्दों पर उनसे बात करते थे, कभी मदद लेते थे और नई पुस्तकों की जानकारी हासिल करते थे।

अपनी और कथाक्रम की ओर से नमन करते हुए हृदय की गहराइयों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

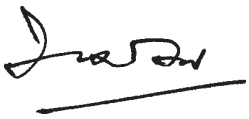

अगला अंक (108) : अप्रैल-जून -2026

कथा क्रम

मधुरेश, कंवल भारती, सीमा स्वधा, मेवा लाल, संजय मनहरण सिंह, जिज्ञासा सिंह, नृपेन्द्र अभिषेक नृप, रमेश शर्मा, उमेश चरपे, दीप्ती सारस्वत, डॉ साधना यादव, पन्ना त्रिवेदी, आदि।

चुनिन्दा कहानियां, लेख, संवाद, लघु कथाएं, समीक्षा, रपट एवं कला-संस्कृति-रंगमंच से जुड़ी सामग्री। पठनीय तथा संग्रहणीय।